

25/4/23

राम - लक्ष्मण - परशुराम संबंध

प्र०-१ परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के हृत जाने के लिए कैसे कहा - कहा जो तरीके दिखा?

उत्तर - धनुष के हृत जाने पर लक्ष्मण ने नियन्त्रित तरीके दिखा

① धनुष पुराना और उत्तमत जीर्ण था।

② राम ने इसे नया समझा कर हाथ छोड़ा था।

पर कमज़ोर होने के कारण पहले हृत गया।

③ मरी हुई में सभी धनुष इसे समान हैं।

④ इसे पुराने धनुष के हृते पर बैठा है।

प्र०-२ परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की प्रतिक्रियाँ हुई उनके आद्यार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ उपरे शब्दों में लिखिए।

उत्तर - राम की विशेषताएँ → ① राम का सभाव उत्तम विनम्र था।

② राम निःरुद्ध, सहासी, अप्रीयविन और मुद्रभाषी था।

③ वे बड़े के उत्तमाकारी तथा उत्तमापलक थे। लक्ष्मण की विशेषताएँ → लक्ष्मण में वास्तुपूर्ण हृत - हृतकर भरी थी।

④ उनका सभाव तर्कशील था।

⑤ वे बुद्धिमान तथा विद्युत प्रयोग करने में निपुण थे।

⑥ वे वीर त्रिंशु काल्येत स्वभाव के थे।

प्र०-३ लक्ष्मण और परशुराम के संबंध का जो उंचा आपके सबसे अच्छा लगा तो उपरे शब्दों संबंध में संबंध लिखिए।

उत्तर - मुझे लक्ष्मण और परशुराम के एक दूसरे का पह अंश "तुम ने काल हृत के जरूर लावा।"

वार-वार मरी हुई लागे लालावा।" विशेष तो से मुझे लगा। पह उंचा संबंध जी उत्तीर्ण

से मुझे लगा। पह उंचा संबंध जी उत्तीर्ण

निम्न लिखित है -

परशुराम अपनी वीरता की द्विगुणोंका द्वारा
लक्षणों के द्वारा वार-वार करका
देख । लक्षणों पर्याय वाली में परशुराम से कहा देख ।
लक्षण - आप ने वार-वार में लिखा काल
को छुलार जाए रहा है ।
परशुराम - तुम जैसे बृहद वालों के लिए घटी
उचित है ।
लक्षण - यह काल का उपर्युक्त नाम है तो वार-वार
छुलार से भागा - भागा चला आरंगा ।

प्र०-४ → परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्षमा-क्षमा
कही, निम्न पद्धतियों के आधार पर विश्विसः
आवेदार

उत्तर → परशुराम ने अपने वार-वार में कहा कि, मैं क्षमा-
बात्रहम्मारी और स्थावर से बहुत ही क्रोधित हूँ । मैं-

क्षमा कुल का नारा करने वाले के समें में
मांसार में प्रसिद्ध हूँ । मैंने अपनी भुजाओं के बीच
पर व पूर्णिके के राजाओं को छोड़ पराजित किया ।

और उनका वध किया । और जीती हुई पूर्णिके
बहमणीका दान में दी, ३-होठ कहा कि, मेरा करसा
बहुत ही मध्यानक हूँ । उससे मैंने बसहस्राह की
बुजारें लाए दी । यह करसा उनका बदल हूँ तो
यह गर्व के बाबा की भी हृत्या कर देता है ।

प्र०-५ → लक्षण ने वीर योद्धा की क्षमा-क्षमा विशेषताएँ बताएँ
उत्तर → लक्षण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं -

① वीर योद्धा ने उक्ति में रात्रि के समक्ष
समझ पराक्रम दिखाते हैं,

② वे रात्रि के समय अपनी वीरता का बोखान
नहीं करते हैं ।

- ③ के लक्षण, देवता, गाय और प्रभ भगवन पर वीरता नहीं दिखते हैं।
- ④ के शांत, विनम्र और धृतिवाल होते हैं।
- ⑤ वीर झांगरहित होते हैं तथा मायशब्द का स्वरोग नहीं करते हैं।

प्र० ६ → साहस और शोक्ति के साथ विनम्रता हो तो उल्लंघन है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उल्लंघन → पह सत्प है कि साहस और शोक्ति हर व्यक्ति के व्यक्तित्व की शास्त्र बदात हैं। तथा योद्धामाओं के लिए ये हुए उन्निवार्य भी हैं किंतु इनके साथ यही उल्लंघन जोत है, विनम्रता से अकारण होने वाले वाद-विवाद पा आप्रेय घटनाएँ होते होते रुक जाती हैं। यह विनम्रता शात्रु के क्रोध पर भी भारी पड़ती है। अपनी विनम्रता के कारण व्यक्ति विपक्षी के लिए भी संमान का रुक पाक बन जाता है।

प्र० ७ → भाव स्पष्ट कीजिए-

क) विद्युति लखनु गोले मृदु बनी। और उद्धो मुनीसु मदाभट मानी। पुनि-पुनि सोहे। देखाव कठाक। चहत उडान है कि पदाक॥

उल्लंघन → प्रस्तुत पदयांश में लक्षण जी ने परशुराम जी पर व्यंग्य बांग छोड़ा है। उन्होंने परशुराम जी को महान प्रोद्धा कहा है। इसके साथ ही साथ यही कहा है कि क्रोधपुक्त व्यवहार करके शात्रु को डराया नहीं जाता है। परशुराम जी ने उन्हें दुर्वल व कमज़ोर समझकर दबाना चाहते हैं और अपने हूँक जे पदाक को उडाना चाहते हैं।

इहाँ क्रम्भिकीतया कोउ नाही तरजुनी देणे मारे जाते।
वीजे क्रांति सरासर बांधा है कहुं कदा सीहत आप्माना।
उल्लः प्रसुत परिवर्त्या का भाव है कि जिस प्रकार सावन के
(ग) अंदे को चारों तरफ हरा ही हरा देखाई देता है,
उमी प्रकार विजय के अंदकार में और वापत का
सभी वीर घोड़ा कमज़ोर एवं दुर्लिखाई देता है।
फलस्वरूप वह उपने से उचित शोकितशाली रुप
को पहचानकर भी नहीं पहचान पाता है।

(ग) गार्दिरु - - - - अख्ल ॥

उल्लः प्रसुत परिवर्त्या का भाव है कि वीर वामान पाठ
क्रम्भि के छोटे अंदे की तरफ नहीं होते जिन्हें तभी
उगती देखत यानी शृङ्खला का घायल बहुत कोदा देखाकर उसे
दरापा पा देया जाता है, जो के साथ तो तीव्र का व्यवहार किया जाता है।

प्र०-४ → पाठ के आधार पर उल्लसी के भावा सौंदर्य का
इसे परिवर्त्यां लिखेते।

उल्लः श्री उल्लसी दास जी देवी हेन्दी साहित्य आकांक्षा
के विकल्पीज्ञान नक्शों में सबसे दीप्त नक्श है।
उनके काम्य से उपर्युक्त है कि भावा पर उनका
पूरा अधिकार है। इनका काम्य उल्लसी
भावा का उल्लट स्वरूप है। भावा में कितनी
क्षुकोमलता, सैरजता, सारलता है इसका
अनुभव पापा को उपर्युक्त लगता है। ३०
काम्य में बहुत उल्लसी नाट - साधन है जिसे
सामान्य से भावा-प जें गाकर भाव-विभाव
हो उठता है। ऐसा जीवन से उल्लिखित होता है।
उल्लसी उल्लवरों ने काम्य को सभीव बोला दिया
है। मिथ्रा हुआ विवेद उल्लक्षण का
साधन, ज्ञान के संस्कृत शब्दों का भवन
उल्लय की गमधीरता प्रदान करता हुआ
सूक्ष्मीकृत प्रयोग आदि को देखकर रीसा भवीत

होता है कि व्याकरण २०१८८५ पर ३० अक्टूबर
पुरा अधिकार था, काल्पनि में वीर रस की
अभिव्यक्ति सरवत्र है। इस वरह भाषा
उनकी अनुगमनी है। इस लगता है कि
उन्होंनो जिस बात को जिस उत्तरह की कहना
चाहे है उसी के अनुद्देश शोल सर्वांग चल कर
आ गए हैं।